[Social Issues and Environmental Problems, Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3233

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

नवीं कक्षा के विद्यार्थियों का कुक्षी में चल रहे समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता का विकास

मधुलिका वर्मा
वरिष्ठ व्याख्याता, शिक्षा अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म0प्र0)

सार
बापू के जीवन का संदेश था ''वह जो सचमुच में भीतर से स्वच्छ है। वह अस्वच्छ बनकर नही रह सकता'' बापू जी सफाई पर बहुत जोर देते थे। बापू का विश्वास था कि स्वच्छता समग्र होनी चाहिये। और इसमें सब सामिल हों। गंदे और दूषित दिमाग में स्वच्छ विचार उत्पन्न नही हो सकते है और एक निर्मल स्वच्छ व्यक्ति अपने आसपास गंदगी में नही रह सकते है।प्रस्तुत शोध समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता का विकास करने एक प्रयास है । प्रस्तुत शोध में धार जिले के कुक्षी क्षेत्र में स्थित विद्यालय में कक्षा 9वीं के 35 विद्यार्थियों को प्रायोगिक समूह के रूप में चयनित किया गया। समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया। पूंव व पश्च परीक्षण प्रकल्प द्वारा प्रदत्तों को संकलन किया गया। प्रदतों का विश्लेषण टी परीक्षण द्वारा किया गया । प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के पूंव व पश्च समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर है। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता कार्य्रकम सार्थक रूप में प्रभावी रहा ।

प्रस्तावना
यह अभियान स्वच्छता तथा स्वस्थ्य रक्षा के प्रति जागरूकता पर केन्द्रित है, समग्र स्वच्छता अभियान का क्रियान्वयन समुदाय आधारित व जन–केन्द्रित रणनीति के अनुसार किया जाता है। मांग आधारित दृष्टिकोण को घरों, विद्यालयों में स्वच्छता सुविधाओं के प्रति और स्वच्छ वातावरण हेतू लोंगों में जागरूकता और मांग पैदा करने पर बल देते हुये अपनायें जाना है। कार्यक्रम के अन्तर्गत त्रिस्तरीय पंचायत राज संस्थाऐं, महिला समूहों, अशासकिय संगठनों की सक्रिय भूमिका निधारित की गई है।

अभियान में निम्न गतिविधियां की जाती है

व्यक्तिगत स्वच्छ शौचालयों का निर्माण – गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों के लिये व्यक्तिगत स्वच्छ शौचालयों के निर्माण हेतु ईकाइ लागत 9900 है इसमें 4600 प्रोत्साहन राशि है। हितग्राही का अंशदान 900 है। मनरेगा का अंशदान रू 4400 है।

समुदायिक स्वच्छता परिसर का निर्माण – यह स्वच्छता परिसर समुदाय उन ग्रामों में बनाये जाना प्रस्तावित है जहां आवासों की सघनता के कारण स्वच्छ पारिवारिक शौचालयों के लिये स्थान उपलब्ध नहीं है।

शालाओं एवं आंगनवाडी केन्द्रों में स्वच्छ शौचालयों का निर्माण – शालाओं एवं आंगनवाडी केन्द्रों में छात्र एवं छात्राओं हेतु पृथक–पृथक शौचालय इकाई निर्मित कराये जाने का प्रावधान है। शालाओं में शौचालय परिसर निर्माण इकाई लागत रू 55000 एवं शासकीय भवन वाली आंगनवाडीयों में बाल सुलभ शौचालय बानये जाना है। जिनकी अधिकतम लागत रू 8000 होगी।

ठोस एवं तरल कुडा करकट का निपटान ग्राम स्तर पर ठोस एवं तरल कूडा करकट के निपटान के लिये जिले में स्वीकृत परियोजना की अधिकतम 10 प्रतिशत धनराशी से निर्माण कार्य कराया जाना है। इसके अंतर्गत ग्राम में नालियों का निर्माण, सोख्ता गड्ढो का निर्माण, कूडे करकट के लिये गडढों आदि का निर्माण

इत्यादि कार्य कराये जा सकते है। योजना लागत में हितग्राही का अंशदान 20 होगा। योजना पूर्ण होने पर रख रखाव की जिम्मिदारी ग्राम पंचायत /हितग्राही की होगी।
इस कार्यक्रम में लगने वाली विभिन्न स्वच्छता सम्बंधी सामग्री जो निर्धारित मापदण्ड के अनुसार हो, उचित मूल्य पर इन केन्द्रों द्वारा उपलब्ध कराई जायेगा ै। इन केंन्द्रों की अधिकतम 5 प्रतिशत या रू 3500 लाख इस मद में उपलब्ध होगी। रू 3.50लाख प्रति केन्द्र राशि उपलब्ध करायी जायेगी। जो की वापसी याग्य होगी तथा नये केन्द्र खोलने के लिये उपलब्ध रहेगी । अतः यह रिवाल्विंग फण्ड के रूप में होगी।
प्रचार प्रसार– सुचना शिक्षा एवं संचार इस कार्यक्रम का आवश्यक घटक हे। इसके अन्तर्गत जिले को प्राप्त होने वाले आवंटन का 15 प्रतिशत व्यय किया जा सकता है।
स्वच्छता के घटक : साफ पीने का पानी, गंदे पानी की निकासी ,स्वच्छ शौचालय , कुडे–करकट का निपटान, घरेलू एवं खान–पान स्वच्छता , व्यक्तिगत स्वच्छता ।
मध्यप्रदेश में वर्तमान में स्वच्छता को नीचले स्तर तक पहुचाने की दृष्टि से ग्राम सभा , स्वास्थ्य ग्राम तदर्थ समिति का गठन किया गया। जो की ग्राम स्तर पर स्वास्थ्य, पेयजल, आपूर्ति, आंगनवाडी के अलावा स्वच्छता का सम्पूर्ण कार्य क्रमशः क्रियान्वयन, संचालन, अनुश्रवण से लेकर निगरानी तक का कार्य करेगी।

औचित्य

अस्वच्छ रहने से हम कई प्रकार की बीमारियों से प्रभावित हो सकते है। व्यक्ति के मल में बीमारियां पैदा करने वाले किटाणु मौजूद रहते है। जिससे पेट के कीडे, पैचिस, अतिसार, हैजा, टाइफाइड, पिलिया आदि बीमारियां फैलते है। जो हमारी मृत्यु का मुख्य कारण हो सकता है। विद्यालयों में शौचालय बनवा कर अधिकतम बालिकाओं को स्कूल आने के लिये प्रेरित कर सकते है। तथा शालाओं में बालिकाओं की संख्या बढायी जा सकती है।
उद्देश्य – प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के पूर्व व पश्च समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता प्राप्तांकों की तुलना करना।
परिकल्पना – प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के पूर्व व पश्च समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
न्यादर्श – प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन यादृच्छित प्रविधि के द्वारा किया गया। इसमे धार जिले के कुक्षी क्षेत्र में स्थित विद्यालय में कक्षा 9वीं के 35 विद्यार्थियों को प्रायोगिक समूह के रूप में चयनित किया गया। उन सभी विद्यार्थियों की उम्र 15 से 18 वर्ष के मध्य थी। वे विद्यार्थी अनुसूचित जाति, व अनुसूचित जन जाति व अन्य पिछडा वर्ग के थे। सभी विद्यार्थी सामाजिक आर्थिक स्तर व शहर एवं ग्रामीण आवासीय प्रष्ठभूमि के थे।
उपकरण – समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया। इसमे समग्र स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत किये जाने वाले कार्य ,निर्माण से संबंधित गतिविधियां, विभिन्न स्वच्छता सुविधाएं में दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि व स्वच्छता के घटक से संबंधित 35 वस्तुनिष्ट प्रश्न थे।
प्रदत्तों का संकलन – प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों को संकलन करने हेतु न्यादर्श के रूप में सौद्देश्य पूर्ण रूप से चयनित विद्यालयों के प्राचार्य से मिलकर अध्ययन के उद्देश्यों से अवगत कराया गया। तत्पश्चात् विद्यालय जाकर विद्यार्थियों से तदात्म स्थापित किया गया व पूर्व परीक्षण प्रसारित किया गया। तत्पश्चात चार्टों द्वारा विद्यार्थियों में जागरूकता उत्पन्न करायी गयी। तत्पश्चात् पश्च परीक्षण प्रसारित किया गया।

परिणाम और विवेचना

प्रस्तुत परियोजना का उद्देश्य के प्रदतों का विश्लेषण टी परीक्षण द्वारा किया गया, परिणाम तालिका क्रमांक (1) में दिया गया है।
तालिका क्रमांक (1) पूंव व पश्च परीक्षण के सदस्यो की संख्या, मानक विचलन, सहसंबंद्य, टी परीक्षण

परीक्षण	N	X	SD	R	टी परीक्षण
पूंव परीक्षण	35	27.48	2.21	0.21	11.52

पश्च परीक्षण	35	33.36	1.220		

सारिणी 1 से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के पूर्व व पश्च समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता प्राप्तांकों का टी टेस्ट का मान 11.52 प्राप्त हुआ व df=34 है जो की सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है इसलिए हमारी शून्य परिकल्पना प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के पूर्व व पश्च समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा, निरस्त की जाती है अर्थात प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के पूंव व पश्च समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर है। अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता कार्य/कम सार्थक रूप में प्र भावी रहा ।

परिणाम र्चचा – प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामो से स्पष्ट है की समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता कार्य/कम सार्थक रूप में प्रभावी रहा क्योंकी दिये गए उपचारात्मक शिक्षण में चार्टों द्वारा विद्यार्थियों में जागरूकता उत्पन्न करायी गयी। शिक्षण व गतिविधि करते समय सरल से कठिन स्तर को ध्यान में रखकर शिक्षण किया गया, तत्पश्चात

इस प्रकार उपचारात्मक शिक्षण, विद्यार्थियों की सहभागिता के साथ एवं उनकी त्रुटियों एवं समस्याओं को दूर करते हुए किया गया जिसके परिणाम स्वरूप पूंव एवं पश्चात परीक्षण में अंतर प्राप्त हुआ ।

शैक्षिक निहितार्थ –

छात्रो के लिये – विद्यार्थियों को यदि सवच्छ रहने के लिए विशेष बातों का अध्ययन कराया जाय तो विद्यार्थियो काफी हद तक सवच्छ एवं स्वस्थ रह सकते है

शिक्षको के लिये – शिक्षको को अलग अलग विद्वियों द्वारा विद्यार्थियो को उनके स्तर एवं समझ के अनुसार ज्ञान प्रदान करने हेतु विद्यार्थियों की सहभागिता में वृद्धि करने के लिए अपनी शिक्षण विद्वि में परिर्वतन कर सकेगे ।

प्रशासको के लिये – विद्वयालय प्रशासक अपने विद्यार्थियो को स्वच्छता के प्रति जागरूक कर उनको दूर करने हेतु विशेष कक्षायों उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था कर सकेंगे।

लेखको के लिये – लखको को जब विद्यार्थियो की अस्वच्छता से होने वाले प्रभाव ,समस्याओं का पता चलेगा तो वे उनको दूर करने के लिये पुस्तकों में विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण विभिन्न गतिविद्वियों, दैनिक जीवन के उदाहरणों द्वारा समस्यायों, को दुर कर सकेंगे

अभिभावकों के लिये – अभिभावको को उनकी स्वच्छता का विशेष ध्यान रखकर उन्हे एक भावी व स्वच्छ छात्रके रूप मे आगे बडा सकेंगे ।

संदर्भ

1. *दैनिक भास्कर (19 नवम्बर 2014) उसके घर में टायलेट मेरे घर में क्यों नहीं।*
2. *दैनिक भास्कर (19 नवम्बर 2014) शौचालय जरूरी जेवर नहीं।*
3. *नई दुनिया (22 अक्टुम्बर 2014) झाडू थामकर ताई ने दी नसीहत।*
4. *दैनिक भास्कर (9 अक्टुम्बर 2014) डॉक्टरों ने दशहरा मैदान पर सफाई की।*
5. *दैनिक भास्कर (9 अक्टुम्बर 2014) कॉमेडियन कपिल ने मुम्बई में लगाई झाडू।*